International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 465-467

बैगा जनजातियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन

डॉ. पारूल गुप्ता[1], डॉ. अलका डेविड[2]
[1] शोधार्थी (पोस्ट डाक्टरेट फैलोशिप फार विमेन बाई यूजीसी) सरोजनी नायडू शास महा0, वि0 भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] ओ0एस0डी0 उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
मध्यप्रदेश की विशेष आदिम जनजाति बैगा जो कि अपने आप को प्रकृति पुत्र कहते हैं का सामाजिक–आर्थिक जीवन बहुत ही सरल है। बैगा जनजाति के लोग आज भी कृषि पर निर्भर हैं। तथा कृषि के द्वारा ही अपना जीवन–यापन कर रहे हैं । लेकिन अपने आप को सभ्य समाज से जोड़ने के लिए वे प्रयत्नशील भी हैं। इसी कारण आज उनका सामाजिक–आर्थिक जीवन भी बदल रहा है।

मूल शब्द : सामाजिक–आर्थिक स्तर, बैगा जनजाति

प्रस्तावना
भारत वर्ष का हृदय स्थल कहलाने वाला राज्य मध्यप्रदेश अपनी जनजातिय सभ्यताओं तथा संस्कृति के कारण अत्यन्त ही रंगीन और मनोरम प्रतीत होता है। मध्यप्रदेश जनजातिय जनसंख्या की बहुलता के कारण देश में प्रथम स्थान रखता है। तथा इन्हीं जनजातियों की सभ्यता, संस्कृति को अपने अन्दर समेट कर एक सांस्कृतिक प्रदेश के भी रूप में जाना जाता है।

जनजातिय शब्द का उच्चारण करते ही मानस पटल पर ऐसी छवि अंकित होती है जिसमें समाज का वह वर्ग दिखता है जो आज भी सभ्य समाज में जुड़ने के लिए अनेकों तरह के प्रयास कर रहा है। जनजातिय समाज आज के इस 21 वीं सदी के युग में भी अनेकों ऐसी सुविधाओं से वंचित है। जो कि 21 वीं सदी की जरूरत बन गयी है । लेकिन कहतें हैं कि समय की गति अतितीव्र होती है। इसलिए इस समय की गति के साथ आज हमारा आदिवासी समाज भी आगे आने को आतुर है जिससे वो समाज के मुख्य धारा से अपने आप को जोड़ सकें ।

मध्यप्रदेश का डिण्डोरी जिला जो बैगा जनजातियों का निवास स्थल कहलाता है । जो कि बैगा चक के नाम से जाना जाता हैं। डिण्डोरी जो कि मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 466 किमी0 की दूरी पर स्थित है । बैगा चक जो बैगा जनजातियों के निवास स्थान का क्षेत्र है कि स्थापना जबलपुर संभाग के सचिव आई.के. लौरियर के आदेश क्रमांक 2860/221/13 मई/1980 द्वारा की गई तथा बैगा चक क्षेत्र डिण्डोरी जिला के विकास खण्ड बजाग, करंजिया एवं समनापुर के अंतर्गत आता है। 2011 की जनसंख्या के अनुसार डिण्डोरी जिले में बैगा जनसंख्या 42,109 पायी गयी हैं। बैगा जनजाति जो कि अपने आप को प्रकृति पुत्र कहलाते हैं का अर्थव्यवस्था पूर्व में पूर्णतः कृषि व वनों पर आधारित थी । वनोपज संग्रह एवं जंगल काटकर, जलाकर बिना हल के की जाने वाली बेवर खेती द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते थे । परन्तु वनों के हास एवं स्वतंत्र तरीके से वनोपज संग्रह एवं वन काटने पर प्रतिबंध लग जाने के कारण बैगाओं की वनों पर निर्भरता कम हो गई, साथ ही बेवर खेती पर प्रतिबंध एवं पर्याप्त स्थायी कृषि भूमि के अभाव ने बैगाओं की स्वनिर्भर आर्थिक व्यवस्था को भंग कर दिया। इसलिए बैगा रोजगार के वैकल्पिक साधन के रूप में मजदूरी पर कार्य करने लगे हैं । कई क्षेत्रों में बैगा परिवार बास का डलिया, झाडू इत्यादि बनाकर भी बेचते हैं। वर्तमान समय में बैगा परिवार अपनी आर्थिक जरूरतों को पूर्ण करने के लिए शहरों का भी रूख कर दिये हैं वो शहरों, कस्बों में जाकर मजदूरी भी करते हैं, जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति भी ठीक हो रही है । आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान भोपाल के प्रतिवेदन ''विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा हेतु संचालित विभागीय योजनाओं से उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन पर प्रभाव'' निर्देशन देवेन्द्र सिंघई अध्ययन प्रभारी जी.पी. पटेल प्रतिवेदन संगीता चौधरी के निष्कर्षो से प्राप्त होता है कि आय व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा सम्मान का प्रतीक है तथा कार्य के लिये प्रेरणा है। इससे जीवन शैली के निर्धारण के साथ ही सामाजिक मूल्यों को दिशा मिलती है। आय सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के निर्धारण के महत्वपूर्ण वियामक हैं।

मण्डला जिले के चयनित विकास खण्डों के सर्वेक्षित ग्रामों में अधिकांश बैगा परिवारों की आर्थिक स्थिति अभी भी दयनीय है । शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता आने से परिवार के बच्चें शिक्षा ग्रहण कर अभिभावकों में जागरूकता की भावना का विकास कर रहे हैं । जिससे विभिन्न शासकीय हितग्राही मूलक योजनाओं का लाभ दृष्टिगोचर हो रहा है । जिसके कारण समाज की प्रति व्यक्ति आय वृद्धि हुई है। परिवार की आय बढ़ने से उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में भी परिवर्तन दिखाई पड़ता है।

डॉ. नीरज गोस्वामी के शोध सौर जनजाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के नियमों से ज्ञात होता है सौर जनजाति की सामाजिक आर्थिक स्थिति की कमजोर है । सौर जनजाति के लोग सर्वाधिक शादी–विवाह के लिए ऋण लेते हैं। इनमें नियमित वेतनधारी शासकीय तथा अशासकीय कर्मचारियों की संख्या बहुत कम है। निम्न वर्ग कृषि व मजदूरी पर आधारित है। सौर जनजाति के लोगों की भविष्य योजना में प्रमुख रूप से घर बनाना बच्चों को पढ़ाना तथा कृषि भूमि खरीदना है। शासन की ग्रामीण विकास योजनाओं का लाभ मात्र एक चौथाई ही मिल पाता है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता हैं कि मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ नहीं हैं। लेकिन शासन द्वारा किये जा रहे प्रयासों से स्थितियों में सुधार आ रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य
बैगा जनजातियों के सामाजिक– आर्थिक स्थिति का अध्ययन।

परिकल्पना
बैगा जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा हैं।

अध्ययन विधि
अध्ययन का क्षेत्र
डिण्डोरी जिले के समनापुर, बजाग व डिण्डोरी ब्लाक के गॉवो को लिया गया है ।

न्यादर्श तथा उसका चुनाव
न्यादर्श हेतु चुने गये ब्लाक के विभिन्न गॉवों से 300 बैगा परिवारों के मुखिया को लिया गया है।

मापन उपकरण तथा फलांकन
तथ्य संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली को लिया गया ।

तथ्यों का विश्लेषण
तथ्यों के विश्लेषण प्रतिशत से किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण

तालिका 1 डिण्डोरी जिले के 300 सूचनादाताओं का उनके मुख्य व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1.	स्वयं की कृषि	71	23-7%
2.	कृषि मजदूर	39	13-0%
3.	स्वयं का कृषि/कृषि मजदूर	165	55-00%
4.	अकृषि मजदूर	2	0-7%
5.	वनोपज संग्रहण	0	0-00%
6.	नियमित शासकीय वेतनधारी	23	7-6%
7.	नियमित अशासकीय वेतनधारी	0	0-00%

उपरोक्त तालिका क्रमांक–1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है 55.00% सूचनादाता स्वयं के खेती एवं दूसरों के खेतों पर काम को करके अपना जीवन–यापन कर रहें हैं वही नियमित शासकीय वेतनधारी 7.6% हैं। जिसकी वजह से उनका आर्थिक स्तर भी अच्छा हैं।

तालिका 2 : सूचनादाताओं की मासिक आय के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	आय श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
1.	कृषि पर निर्भर	120	40-0%
2.	500 – 1500	112	37-33%
3.	1600 – 2500	44	14-7%
4.	2600 – 3500	2	2%
5.	3600 – 4500	4	1-3%
6.	4600 – 5500	4	1-3%
7.	5600 – 6500	0	0-00%
8	6600–7500	0	0-00%
9	7600–8500	0	0-00%
10	8600–9500	0	0-00%
11	9600–10500	0	0-00%
10	10600 से अधिक	14	4-7

तालिका क्रमांक–2 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 40.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि से मिलने वाले आय पर निर्भर है । सूचनादाताओं ने ये बताया कि जैसे फसल होती है उसकी आय उस पर निर्भर है तथा वे अपनी अनुमानित आय नहीं बता पा रहे थें । सूचनादाता कृषि के फसल को हाट में अपनी जरूरत के हिसाब से बेचते है तथा जो पैसा मिलता है उससे अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं । तथा ये सूचनादाता अपनी फसलों को बेचने के बाद के पैसे को भी नहीं बता रहे थे जिससे उनकी आय का पता चल सके । 37.33 प्रतिशत सूचनादाताओं को बताया कि उनकी आय 500 – 1500 के बीच है । कुछ सूचनादाताओं ने बताया कि उन्हे अन्य तरह की मजदूरी से भी पैसे मिलते हैं । 4.7 प्रतिशत सूचनादाता 10600 से अधिक कमाते हैं उनमें से कुछ सरकारी नौकरी वाले भी हैं।

- 89.0% सूचनादाताओं के पास कृषि भूमि है जो कि असिंचित कृषि भूमि है ।
- 38.69% के पास 5 एकड़, 13.39% के पास 3 एकड़ 13.1% के पास 2 एकड भूमि हैं।
- 90.33% सूचनादाताओं के पास बैल, गाय, भैस, बकरी, मोटर साइकिल, टैक्टर, थ्रेसर, टी.वी. मोबाइल जैसे साधन सम्पत्ति है।

तलिका 3 सूचनादाताओं के पास उपलब्ध साधन सम्पत्तियों के आधार पर वर्गीकरण

साधन सम्पत्ति	हाँ		नही		उपलब्ध साधन सम्पत्तियों की संख्या					
	न0	%	न0	%	1	2	3	4	5	6
बैल	229	84.5	42	15.5	40	157	9	23	0	0
गाय	94	31.3	177	68.7	45	26	12	9	0	2
भैंस	6	2.2	265	97.8	2	4	–	–	–	–
बकरी	37	13.65	234	86.0	9	11	4	11	2	–
बैलगाड़ी	0	00.0	271	100.0	–	–	–	–	–	–
ट्रैक्टर	3	1.10	268	98.89	3	–	–	–	–	–
थ्रेसर	0	00.0	271	100.0	–	–	–	–	–	–
पम्पसेट	0	00.0	271	100.0	–	–	–	–	–	–
मोटर साइकिल	22	8.1	249	91.9	22	–	–	–	–	–
टी.वी	36	13.3	235	86.7	–	–	–	–	–	–
मोबा.	119	43.9	152	56.1	116	2	1	–	–	–

– 84.5% सूचनादाताओं के पास बैल तथा इनमें से 157 के पास दो जोड़ी बैल हैं। 31.3% सूचनादाता के पास गाय है तथा इनमें से

45 सूचनादाताओं के पास 1 गाय हैं। 8.1 के पास मोटरसाइकिल 13.3% के पास टी.वी., 43.9% के मोबाइल है ।

- 4.7% सूचनादाताओं ने ही ऋण लिया है। जो कि कृषि, शिक्षा, मकान के लिए लिया गया हैं तथा ये ऋण शासकीय बैंक, अशासकीय बैंक, साहूकार व मित्र से लिया गया है।
- 100% सूचनादाताओं के पास उनका स्वयं का मकान हैं तथा 45.0% सूचनादाता के मकान 2 कमरे का है, 91.3% सूचनादाता के मकान की दीवाल व फर्श कच्ची है, 86.0% सूचनादाताओं के छत खप्पर के हैं। 6.6% के ही छत पक्की हैं क्योंकि पक्की छत के लिए लागत अधिक लगती है।
- 79% सूचनादाताओं के घरों में बिजली है। 41.7% सूचनादाताओं के यहॉ शौचालय भी है।
- 11.7% सूचनादाताओं के घर में शासकीय नौकरी में भी हैं।

निष्कर्ष

बैगा जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के अध्ययन के उपरांत प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति के अधिकांश लोग स्वयं की कृषि तथा कृषि मजदूरी करके ही अपना जीवन–यापन कर रहे हैं। चूंकि वे पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है व उनके पास कम व असिंचित भूमि भी है । जिस कारण उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं लेकिन जो लोग मजदूरी कर रहे हैं और शहर आ रहे हैं उनकी सामाजिक– आर्थिक स्थिति थोडी ठीक है । शासकीय वेतनधारी की सामाजिक आर्थिक स्थिति अच्छी है । सूचनादाताओं के पास अपना घर होने से उन्हें अन्यत्र भटकना नहीं पड़ता है। तथा वे अब कम पैसे में अपने रहन–सहन को बदल रहे हैं। सूचनादाताओं के पास अब बैल, गाय, बकरी, भैस, मोटरसाइकिल, ट्रैक्टर, थ्रेसर, टी.वी., मोबाइल जैसे चीजें भी हैं। तथा शासकीय योजनाओं के कारण भी उनका सामाजिक–आर्थिक स्तर ठीक हो रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति के लोगों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवर्तन तो हो रहा हैं लेकिन उसकी गति अभी बहुत ही धीमी है।

संदर्भ

1. डॉ. गोस्वामी नीरज (2015), सौर जनजाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पेज नंबर– 154, 155
2. डॉ. चौरसिया विजय (2004) प्रकृति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल पेज नंबर– 108, 217, 218
3. डॉ. गुप्ता मंजू (2003) जनजातियों का सामाजिक–आर्थिक उत्थान अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पेज नंबर– 70
4. पटेल जी.पी. (अध्ययन प्रभारी, चौधरी संगीता (प्रतिवेदन), विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा हेतु संचालित विभागीय योजनाओं से उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन पर प्रभाव, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, भोपाल पेज नंबर– 69, 70